Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G-T)

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

THINKING PROCESSES

सामान्यतः मानव प्रयत्नों द्वारा चलने वाली मानसिक क्रिया को चिंतन कहा जाता है लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने चेतना के स्तर पर होने वाली क्रिया से भिन्न भी विचार की संभावना को माना है। उन्होंने चिंतन प्रक्रियाओं को चार वर्गों में विभाजित है। जिसका वर्णन इस प्रकार है:-

1. उपदेशात्मक चिंतन-

उपदेशात्मक चिंतन एक निम्न कोटि का चिंतन होता है। इसमें व्यक्ति की संवेदना और प्रत्यक्षीकरण ज्ञान के काम में आते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इसमें भी पूर्व अनुभवों का प्रयोग किया जाता है क्योंकि इन्ही आधारों पर व्यक्ति कुछ निश्चय करता है। पशुओं का चिंतन केवल उपदेशात्मक चिंतन तक ही सीमित होता है। जैसे- एक कुत्ता रोटी पाने के लिए घर में घुसता है, लेकिन घर के मालिक को हाथ में लाठी लेकर आता देखकर भाग खड़ा होता है।कुत्ते के भागने का कारण उसका प्रत्यक्षातमक चिंतन ही है जिसमें उसका पुर्व अनुभव भी शामिल होते है। उसी के आधार पर कुत्ता यह तय करता है कि घर के मालिक इसी प्रकार से

उसके घर में घुसने पर पहले भी लाठी से मारा था, इसलिए आज भी मारेगा और वह वहां से भाग जाता है। पशुओं के अतिरिक्त बच्चों का चिंतन भी उपदेशात्मक होता है।

2. अनुमानात्मक चिंतन-

अनुमानात्मक चिंतन अनुभवों के द्वारा मस्तिष्क में अंकित प्रतिमाओं के आधार पर किये जाते है। इस प्रकार के चिंतन में प्रत्यक्ष अनुभव का आभाव रहता है। यह बच्चों द्वारा भी किया जाता है और वयस्कों द्वारा भी। इस तरह के चिंतन का पशुओं में सर्वथा आभाव होता है। इसमें केवल स्मरण शक्ति का ही सहयोग रहता है।

3. संकल्पनात्मक चिंतन-

यह विचार संकल्पनाओं के द्वारा चलता है। इस प्रकार के विचार में कल्पनाऔं का स्थान प्रत्य ग्रहण कर लेते है। इस प्रकार पुराने अनुभवों के आधार पर भविष्य का ध्यान रखते हुए किसी निश्चयपर पहुंचनासंकल्पनात्मक चिंतन कहलाता है।

4. नैयायिक चिंतन-

किसी कठिन समस्या के उपस्थित होने पर अपने अनुभवों के आधार पर तर्क-वितर्क द्वारा समस्या का समाधान करना नैयायिक चिंतन होता है।